(6). समवाय (Inherence)

समवाय एक प्रकार का आंतरिक संबंध है। "नित्य संबंध: समवाय:"। यह आंतरिक संबंध नित्य है। 'समवाय' वह संबंध है जिसके कारण दो पदार्थ एक दूसरे में समवेत रहते हैं और यह संबंध अयुत-सिद्ध वस्तुओं के बीच होता है। अयुतसिद्ध वस्तुएँ वे हैं जिनका पृथक अस्तित्व नहीं रह सकता। उदाहरणस्वरूप- गुण और द्रव्य, कर्म और द्रव्य, सामान्य और व्यक्ति, अवयव और अवयवी आदि अयुतसिद्ध वस्तुएँ हैं। अर्थात इन वस्तुओं के बीच समवाय संबंध विद्यमान रहता है। उसी प्रकार से धागों और कपड़ों के बीच, गुलाब के फूल और सुगंध के बीच जो संबंध है वह समवाय संबंध कहलाता है।

समवाय संबंध नित्य होता है. जैसे- कुर्सी और उसके अवयवों के बीच का संबंध नित्य है क्योंकि कुर्सी की उत्पत्ति और नाश के बाद भी अवयव विद्यमान रहते हैं। समवाय नित्य एवं एक ही होता है इसके विपरित विशेष अनेक होता है।

न्याय वैशेषिक में दो प्रकार के संबंध माने जाते हैं- संयोग और समवाय। संयोग एक अनित्य संबंध है। इस प्रकार से पृथक पृथक वस्तुओं का कुछ काल के लिए परस्पर मिल जाना 'संयोग' कहलाता है। जैसे- नाव का नदी के पानी के साथ संबंध। तथा पक्षी वृक्ष की डाल पर आकर बैठता है। उसके बैठने से वृक्ष की डाल और पक्षी के बीच जो संबंध होता है, वह 'संयोग' है। यह संबंध अनायास हो जाता है। इस तरह से संयोग एक बाह्य संबंध है जो द्रव्यों के आकस्मिक गुण के रूप में प्रकट हो-कर उन्हें कुछ काल के लिए मिलाए रखता है। तथा कुछ काल के बाद यह संबंध टूट भी सकता है, इसलिए इसे अनित्य संबंध भी कहा जाता है।

समवाय और संयोग में अन्तर :-

यद्यपि समवाय और संयोग दोनों संबंध है फिर भी इनमें कुछ मूल अंतर है। वे है :-

(1)- संयोग एक बाह्य संबंध है, किंतु समवाय एक आंतरिक संबंध है।

(2)- संयोग क्षणस्थायी है, किंतु समवाय स्थायी होता है।

(3)- संयोग द्वारा वस्तुएँ एक-दूसरे से पृथक की जा सकती है, किंतु समवाय द्वारा नहीं। उदा०- पुस्तक और टेबल को एक-दूसरे से पृथक किया जा सकता है, किंतु द्रव्य और गुण को नहीं। चीनी में मिठास समवेत है। मिठास को चीनी से पृथक नहीं किया जा सकता है।

(4)- संयोग एक प्रकार का आकस्मिक संबंध है, जबकि समवाय एक आवश्यक संबंध है।

(5)- संयोग अपने सम्बद्ध पदों के स्वरूप को निर्धारित नहीं करता, किंतु 'समवाय' सम्बद्ध पदों का स्वरूप निर्धारित करता है।

(6)- संयोग के लिए दोनों या कम-से-कम एक वस्तु में गति या कर्म का होना आवश्यक है, किंतु समवाय किसी कर्म या गति पर निर्भर नहीं है।

(7)- संयोग अनित्य होता है, किंतु समवाय नित्य। प्रभाकर और उनके अनुयायी समवाय को नित्य और अनित्य दोनों प्रकार का मानते है। उनका मानना है कि नित्य वस्तुओं के बीच समवाय नित्य है और अनित्य वस्तुओं के बीच समवाय अनित्य कहा जाता है।

(8)- न्याय-वैशेषिक दर्शन संयोग को स्वतंत्र पदार्थ नहीं मानते, किंतु समवाय को स्वतंत्र पदार्थ मानता है।

समवाय का स्वरूप या लक्षण :→ समवाय की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

(i)- समवाय से संबद्ध पद एक-दूसरे से पृथक नहीं हो सकते। जैसे- चीनी और मिठास को चीनी से अलग नहीं किया जा सकता आदि।

(ii)- यह एक नित्य अयुतसिद्ध एवं स्वायी संबंध है।

(iii)- समवाय को प्रतिसाम्य संबंध नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस संबंध से जुड़े पदों का स्थानांतरण किया जा सकता है।

उदा०- सभी मनुष्य विवेकशील प्राणी हैं। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है - सभी विवेकशील प्राणी मनुष्य हैं।

यहाँ पर 'मनुष्य' और 'विवेकशील' प्राणी में प्रतिसाम्य संबंध पाया जाता है।

(iv)- समवाय के लिए आवश्यक नहीं है कि इससे सम्बद्ध पद द्रव्य ही हों। गुण और कर्म का द्रव्य के साथ समवाय सम्बन्ध रहता है।

(v)- समवाय द्वारा संबंद्ध दोनों पद समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। एक में परिवर्तन दूसरे में भी परिवर्तन कर देता है।

(vi)- वैशेषिक के अनुसार समवाय का ज्ञान प्रत्यक्ष के द्वारा होता है, परन्तु नव्य नैयायिकों के द्वारा अनुमान को ही समवाय ज्ञान का साधन माना जाता है।

⇒ इस प्रकार से वैशेषिक-दर्शन समवाय को एक स्वतंत्र पदार्थ माना गया है। उनका तर्क है कि यदि द्रव्य वास्तविक है, गुण वास्तविक है तो दोनों का सम्बन्ध समवाय भी वास्तविक है। यदि व्यक्ति और सामान्य दोनों वास्तविक हैं तब व्यक्ति और सामान्य का सम्बन्ध-समवाय-भी वास्तविक है। अतः समवाय को एक स्वतंत्र पदार्थ मानना न्याय-संगत है।

—×—